International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 28-08-2021, Accepted: 12-09-2021, Published: 28-09-2021
Volume 7, Issue 5, 2021, Page No. 53-54

महिलाओं के लिए शिक्षा की उपयोगिताः आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

लक्ष्मी मिश्रा[1], डॉ. धीरेन्द्र सिंह[2]

[1] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना, मध्य प्रदेश, भारत

[2] शोध–निर्देशक, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

महिलाएं मूल रूप से प्रत्येक समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है जिनकी जनसंख्या लगभग पुरुषों के बराबर है। महिलाओं में शिक्षा की उपयोगिता प्राचीन काल से रही है। आधुनिक सन्दर्भ में महिलाओं के लिए शिक्षा अधिक उपयोगी हो जाती है क्योंकि समाज में अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए शिक्षा एक मजबूत कड़ी का कार्य करती है। शिक्षा समाज के लिए वरदान है। शिक्षा के बल पर महिलाएं किसी भी पद को ग्रहण कर सकती है। शिक्षा से आज महिलाओं के व्यक्तित्व में दिनों–दिन विकास हो रहा है। उसी से आज महिलाएं अच्छे–अच्छे पदों पर आसीन हो रही है जैसे, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राजनीतिक एवं प्रशासनिक सेवाओं आदि में महिलाओं को संवैधानिक रूप से छूट प्रदान की गई है जिससे महिलाएं अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकें।[1] महिलाओं के लिए शिक्षा आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य तत्व है। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए शिक्षा आवश्यक है। महिलाओं के शिक्षित होने से पुरुषों के बराबर बौद्धिक निर्णय लेने की शक्ति आती है। पुरुषों और स्त्रियों को शिक्षा का समुचित अधिकार होना चाहिए। इन शैक्षणिक प्रावधानों के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्हें समान अवसर प्रदान प्राप्त करना मध्यप्रदेश सरकार का लक्ष्य है।[2]

मूलशब्दः शिक्षा, समाज, चुनौती, अधिकार, राजनीति एवं सद्गुण।

प्रस्तावना

शोध प्रविधि

इस शोध–पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक शोध सामाग्री के आधार पर अध्ययन किया गया है। इस शोध–पत्र में अध्ययन हेतु पत्र–पत्रिकाओं, विद्वानों का मार्गदर्शन प्राप्त किया गया है।

समस्या

शिक्षा को महिलाओं के सामने आने वाली जटिल समस्याओं के निवारण हेतु सबसे बड़ा साधन माना गया है। महिलाओं के लिये शिक्षा की आवश्यकता अत्यधिक होने और उन्हें अधिकार प्राप्त होने के बाद भी आज महिलाएं उपेक्षित महसूस कर रही है। महिलाओं के सामने यह चुनौती और विभिन्न समस्याएं से भरा कार्य कहा जा सकता है। फिर भी भारतीय समाज को विकास की गति देने में महिलाओं का शिक्षित होना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि बच्चों की शिक्षा का प्रारम्भ माँ से होता है।[3] माँ ही बच्चों को सद्गुण और अवगुण से अवगत कराती है। इस प्रकार से यदि महिलाओं की शिक्षा को नजरंदाज किया जाय तो देश के भविष्य के सामने सबसे बड़ी चुनौती होगी। शिक्षा से वंचित महिलाओं में वो योग्यता नहीं होती जिससे अपने बच्चों की शिक्षा और परिवार का सही ख्याल रख सकें। यदि महिलाओं को शिक्षा से वंचित किया गया तो आने वाली पीढ़ी हमेंशा के लिए बौद्धिक रूप से कमजोर हो जायेगी।[4]

उद्देश्य

- शिक्षा से व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। इसीलिए महिलाओं के शिक्षित होने से समाज में जनजागरूकता पैदा होगी।
- महिलओं पर होने वाले अत्याचार से शिक्षा मुक्ति प्रदान करती है क्योंकि शिक्षा ही अपने अधिकार के प्रति सजग और सरल बनाती है।
- इसी कारण मध्यप्रदेश सरकार बेटी बचाओं और बेटी पढ़ाओं योजना की शुरूआत की है। वर्ष 2015 में जब सर्वेक्षण हुआ तो देश भर में घटते हुए बाल लिंगानुपात के मुद्दे को बराबर करने के लिए यह योजना को प्रारम्भ किया गया जिससे महिलाओं में शिक्षा से साक्षरता का विकास हो। इससे महिलाओं में शिक्षा के प्रति जनजागरूकता आयेगी।
- कन्या भ्रूण हत्या रोकने हेतु जागरूकता लाना प्रत्येक शिक्षित महिला का कर्तव्य है।
- सभी महिलाओं को सर्वशिक्षा अभियान की ओर प्रेरित करना।
- कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना से बालिकओं की शिक्षा–दिक्षा और साक्षरता दर में वृद्धि करना।
- महिला समाख्या योजना की शुरूआत 1989 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से महिलाओं को शिक्षा के स्तर को सुधार करने हेतु प्रोत्साहित किया गया।
- मध्यप्रदेश सरकार के माध्यम से सर्व शिक्षा अभियान के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में वृद्धि हेतु नीव रखी गई।
- बालिका समृद्धि योजना, राष्ट्रीय महिला कोष योजना, महिला समृद्धि योजना एवं महिलाओं और लड़कियों के बौद्धिक विकास के स्तर को सुधारने हेतु विभिन्न कार्यक्रम मध्यप्रदेश सरकार द्वारा संचालित किये जा रहे हैं। इससे महिलाओं और बालिकाओं में जागरूकता आयेगी और उनके बौद्धिक विकास में वृद्धि होगी।

समाधान

महिलाओं में शिक्षा के विकास और महत्व को समझना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि महिलाएं ही अपने बच्चों की प्रथम गुरु है जो उनके भविष्य निर्माण की एक इकाई का निर्माण करती है। किसी भी बच्चे का भविष्य माँ के प्यार पर निर्भर करता है जिसका पूर्ण उत्तरदायित्व माता पर होता है। प्रत्येक बच्चा अपनी जिन्दगी की शुरूआत माँ के बौद्धिक चिन्तन से सीख कर करता है। इसलिए माता का शिक्षित होना बहुत ही आवश्यक है। वे अपने बच्चे में सद्गुण डाल सके जो उनके भविष्य निर्माण की नीव होगी। एक शिक्षित महिला समाज में रहने वाले लोगों के आस–पास के वातावरण को बदल देती है।[5] देश को विकास की दिशा में ले

जाने में महिलाओं का शिक्षित होना बहुत ही आवश्यकता है जिस प्रकार से मानव को जीविक रहने के लिए पानी और हवा की जरूरत होती है। उसी प्रकार देश की प्रगति के लिए नारी को शिक्षित होना।

महिला साक्षरता में वृद्धि हेतु विभिन्न योजनाओं के माध्यम से मध्यप्रदेश सरकार प्रोत्साहित करती है। एक शिक्षित महिला बच्चों और परिवार की जिम्मेदार को सकुशल रूप से निर्वहन कर सकती है। इस प्रकार से यदि एक पुरुष को शिक्षित किया जाता है तो एक व्यक्ति तक शिक्षा पहुँच पायेगी। यदि एक महिला को शिक्षित किया जाए तो वह सम्पूर्ण राष्ट्र तक शिक्षा का विकास कर पायेंगी। यदि महिला साक्षरता में कमी हुई तो देश की स्थित स्वतः कमजोर पड़ने लगती है। इसी कारण महिलाओं को शिक्षा के प्रति प्रेरित करना बहुत ही आवश्यक और अनिवार्य है। महिलाओं को शिक्षा के अधिकार प्रदान कर उन्हें और मजबूत बनाया जा सकता है। इससे समाज में नारी और पुरुष में भेद को समाप्त किया जा सकता है। भारतीय समाज में महिलाओं की साक्षरता दर में वृद्धि हो रही है। भारतीय सांस्कृतिक परम्परा के ऐतिहासिक परिदृश्य को देखने से पता चलता है कि भारत की महिलाएं बहुत ही मेहनती और बहादुर थी – जैसे अहिल्याबाई, मीराबाई, दुर्गावती और लक्ष्मीबाई आदि। यहाँ तक वेदों में भी गार्गी, मैत्रयी, विस्वबरा आदि का नाम लिया जाता है। ये सभी महिलाएं भारतीय समाज के लिए प्रेरणा स्रोत है। इनके योगदान को समाज कभी भूल नहीं सकता है। "नारी यदि सुविकसित सुशिक्षित व सुसंस्कृत हो, तो वह अपने पति के लिए, संतान के लिए, परिवार के लिए व स्वयं के लिए भी एक वरदान है। शरीर का निर्माण तो आहार–विहार से भी हो सकता है, किंतु व्यक्ति के मनोभूमि का निर्माण व विकास, जिस पर सर्वतोमुखी उन्नति अवलंबित है, आदर्श नारी के समुचित सहयोग बिना संभव नहीं।"[6] इससे ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, धर्म और विज्ञान इत्यादि विषयों के द्वारा गुरु और शिष्य दोनों ने अधिकार की प्रधानता पर बड़ी गंभीरता से चिन्तन किया है। शिक्षा की शक्ति ने माता को देवता माना है, पिता को देवता माना है और आचार्य को देवता माना है[7] इसके साथ–साथ अतिथि को भी देवता माना है। इस प्रकार का आदर्श एक माता अपने पुत्र को प्रदान करती है। इससे बड़ी शिक्षा इस राष्ट्र के लिए और क्या हो सकती है।

महिला शिक्षा व्यवस्था को लेकर आधुनिक प्रगति की ओर अग्रसर हो रही हैं। यहाँ तक शहरी और ग्रामीण परिवेश में महिलाओं के शिक्षा स्तर में बहुत ही अधिक अंतर दिखाई देता है। शहरी क्षेत्र की महिलाओं को साधन–सुविधाएं आसानी से उपलब्ध होती है। इससे उनके विकास के मार्ग ज्यादा सुगम होने लगते है। उन्हें एक ऐसे शैक्षणिक परिवेश मिल जाता है जिससे उनके शैक्षणिक वातावरण में उन्नति होने लगती है जबकि ग्रामीण परिवेश में महिलाओं को ऐसी साधन–सुविधा नहीं मिल पाती है जो शिक्षा की ओर अग्रसर कर सके। फिर भी मध्यप्रदेश सरकार उन ग्रामीण महिलाओं को विकास की मुख्यधारा में लाने के लिए विभिन्न योजनाओं का संचालन कर रही हैं। यदि महिला शिक्षित हुई तो सबसे पहले अपने बच्चों को शिक्षा की ओर अग्रसर करती है।[8] उन बच्चों के मन में सद्गुणों से परिपूर्ण संस्कार अवगत करती है। इससे बच्चे के मन और मस्तिष्क में सबसे अच्छा प्रभाव पड़ता है। शिक्षित माता ही बच्चों के उर्बर मन मस्तिष्क में बीज डालकर उसे पल्लवित करने में मदद करती है। वहीं बच्चे आगे चलकर समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान देते हैं।

निष्कर्ष

आधुनिक प्रगति को शिक्षा के बल पर चरम सीमा तक पहँचाया जा सकता है। इसे ही विश्वसंघर्ष के लिए आदर्श, नैतिकता, परोपकार, सदाचार, सत्य, अहिंसा आदि को चरितार्थ किया जा सकता है। इसी से महिलाओं बौद्धिक विकास में शिक्षा का अत्यधिक प्रदुर्भव होता है। इससे महिलाओं को प्राप्त होने वाली शिक्षा राष्ट्र की नीतियों में सहभागी होगी। शिक्षा का व्यक्ति के जीवन में बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है। महिलाओं में शिक्षा का विकास अनुशासन, संस्कृति, धर्म, नीतियों, आदर्शों और मूल्यों को उपयोगी बनाता है।

सन्दर्भ सूची

1. जे. सी. अग्रवाल, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1994, पृष्ठ 18
2. डॉ. एस.के. पाल,, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2001, पृष्ठ 4–6
3. यू.सी. अग्रवाल, सर्वशिक्षा अभियान, वृहद लक्ष्य कमजोर प्रयास, प्रतियोगिता दर्पण, मासिक पत्रिका मुद्रक एवं प्रकाशक महेन्द्र जैन, 2003 पृष्ठ 774–775
4. राम आहुजा, सोशल प्रोब्लम्स इन इंडिया, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2001, पृष्ठ 35
5. अखिलेश आर्येन्दु, प्राथमिक शिक्षा और सरकारी कार्य योजना, 'कुरूक्षेत्र', मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष–53, अंक–11, पृष्ठ 10–12।
6. पं. श्रीराम शर्मा, आचार्य, वाड्.मय शिक्षा एवं विद्या, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, संशोधित संस्करण, 2012, पृष्ठ 4.23
7. मातृदेवो भव, पितृदेवा भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव।, शिक्षा अंक, गीताप्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 7
8. देवाशीष उपाध्याय, शिक्षा का मूल अधिकार 'कुरूक्षेत्र,' मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली, 2007 वर्ष 53, अंक–11, पृष्ठ 26–30